सुबह का स्वर्गीय मन्ना (1 जनवरी)

भजन संहिता 66:8, 9 हे देश देश के लोगो, हमारे परमेश्वर को धन्य कहो, और उसकी स्तुति में राग उठाओ, जो हम को जीवित रखता है; और हमारे पांव को टलने नहीं देता।

परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उन्होंने हमें अपने अनुग्रह के द्वारा बचाकर रखा है, "हमें ठोकर खाने से बचाया" (यहूदा 1:24) है । हाँ, एक और वर्ष हमें बचाकर दूसरे नए वर्ष में लाया है। अभी भी हममें से बहुत से उनके वचन और उनकी सेवा में एक मन और एक ह्रदय में बने हुए हैं! जब हम ये याद करते हैं कि (2 थिस्सलुनीकियों 2:10-12) वचनों के अनुसार परमेश्वर की अनुमति से शैतान को परमेश्वर के लोगों को "भटका देने" की अनुमति मिलेगी ताकि जो भी सचमुच में परमेश्वर के निज लोग नहीं हैं, उन्हें फटककर बाहर किया जा सके, ऐसे में निश्चय ही नए साल की शुरुआत में हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए क्योंकि हम उनके अनुग्रह से अभी भी सच्चाई में दृढ़ता से खड़े हैं -- सच्चाई की सराहना कर रहें हैं और उन सभी दिव्य प्रबन्धों के साथ तालमेल में हैं जिनके द्वारा परमेश्वर ने हमें ठोकर खाने से बचाकर रखा है। Z.'03-3 R3125:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (2 जनवरी)

1 कुरिन्थियों 6:19, 20 ...तुम अपने नहीं हो? क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो॥

नऐ साल की शुरुवात में इससे अच्छा पाठ और क्या हो सकता है कि, हम अपने नही हैं, बल्कि मसीह के हैं, इसलिए हम यहाँ खुद को प्रसन्न करने के लिए नही हैं, बल्कि प्रभु को प्रसन्न करने के लिए हैं, खुद की सेवा करने के लिए नहीं हैं बल्कि प्रभु की सेवा करने के लिए हैं। अपनी इच्छा का पालन नही करना है बल्कि प्रभु की इच्छा का पालन करना है। इसका मतलब हमें व्यापक और सम्पूर्ण रूप से वचन के द्वारा पूरी पवित्रता में बढ़ना है (न केवल पाप से धार्मिकता की और बढ़ना है, बल्कि अपनी स्वयं की इच्छा से दूर जाकर मसीह में परमेश्वर की इच्छा को करना है)। Z.'97-35 R2099:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (3 जनवरी)

1 थिस्सलुनीकियों 5:17 निरन्तर प्रार्थना मे लगे रहो।

प्रार्थना में निश्चितता और दृढ़ता के सम्बन्ध में हमारा प्राकृतिक झुकाव चाहे जो भी हो, हमें प्रार्थना करने के लिए उपदेश अवश्य पवित्रशास्त्र से ही लेने चाहिए। हमें अपने प्राकृतिक झुकाव पर जय पाते हुए, "छोटे बच्चों" और "प्रिय बालकों" की तरह हमारे विचारों और आचरण को उन उपदेशों के अनुसार ढालना चाहिए जो ऊपर से मिलते हैं। इसलिए, आइये हम सब यूहन्ना 16:24 वचन के उपदेश को याद रखें - “माँगो (मेरे नाम से), तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाये”। स्वर्गीय पिता के पास उनके भण्डार में कई गुणा दया, आशीषें और दिव्य प्रबन्ध हैं, उनके आज्ञाकारी और विश्वासी बालकों के लिए, जो ये सब मांगते हैं। Z.'96-162 R2005:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (4 जनवरी)

भजन संहिता 27:14 यहोवा की बाट जोहता रह; हियाव बान्ध और तेरा हृदय दृढ़ रहे; हां, यहोवा ही की बाट जोहता रह!

परमेश्वर की योजना का महत्वपूर्ण अंश है 'समय', इसलिए जब धीरज से सहने की परिक्षा में आशीषें मिलने में देर हो तो हमें निराश नहीं होना है। परमेश्वर ने दुनिया को बनाने में और इसे मनुष्य के रहने योग्य बनाने में भी समय लिया; मनुष्यों को बुराई का अनुभव कराने के लिए भी परमेश्वर ने समय लिया; प्रभु यीशु को दुनिया का उद्धारकर्ता बनाकर भेजने के लिए भी परमेश्वर ने समय लिया; मसीह के महिमा वाले राज्य में भागीदार होने के लिए कलीसिया की तैयारी में में भी परमेश्वर समय ले रहें हैं, और परमेश्वर के हर एक लोग के सभी मामलों को सुधारकर उन्हें मसीह के रूप में बनने के लिए समय देना बहुत आवश्यक है। जब हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर लम्बे समय तक नहीं मिलता है तो इसका मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर हमें भुल गए हैं। परमेश्वर भूलते नहीं हैं। वह जो चिड़िया के गिरने का भी ख्याल रखते हैं और हमारे सर के बाल भी गिनते हैं, वे अपने बच्चों की धीमी सी आवाज़ और हर जरुरत की पुकार को सुनते हैं। Z.'95-20 R1760:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (5 जनवरी)

रोमियो 15:3 क्योंकि मसीह ने अपने आप को प्रसन्न नहीं किया, पर जैसा लिखा है, कि तेरे निन्दकों की निन्दा मुझ पर आ पड़ी।

आइये हम प्रयत्न करें और देखें कि मसीह ने जिन निन्दाओं को सहा था, हम भी मसीह की निन्दाओं को सहें। ठीक उसी तरह, जैसे मसीह उनपर तरस खाते थे और गलतियों से भरी भ्रष्ट मानवजाति के लिए प्रार्थना करते थे, हमें भी उनपर तरस खाना है और प्रार्थना करनी है। परमेश्वर शायद इस भ्रष्ट मानवजाति को पछताने, सुधरने का एक अवसर दे दें। हमें एक अच्छे सिपाही की तरह उनकी सेवा में हर प्रकार की कठोरता को धीरज से सहना है और नम्र बनकर इसे प्रभु के प्रति हमारी भक्ति को साबित करने का एक विशेषाधिकार समझना है। जब प्रभु यीशु धरती पर आये तो मनुष्य की भ्रष्टता को देखकर अचम्भित नहीं हुए। वे जानते थे की वे एक अमित्रतापूर्ण संसार में हैं जो बड़ी मात्र में पाप में बंधी हुई है और अन्धकार के राजा के वश में है और इसलिए वे अपने लिए निन्दा, अपमान, विरोध, ताड़ना, ताना और अत्याचार की उम्मीद करते थे--और उन्होंने इन सभी अनुभवों को धीरज के साथ सहा। उस समय, उनका प्रेम से भरा हुआ ह्रदय, अपनी खुद की पीड़ा से अनजान सा रहता था और उनके ह्रदय में दूसरों के लिए तरस और प्रेम भरी चिन्ता रहती थी। Z.'96-83 R1964:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (6 जनवरी)

भजन संहिता 90:12 हम को अपने दिन गिनने की समझ दे कि हम बुद्धिमान हो जाएं॥

एक मसीही, जब अपने दिन गिनता है, तो वह ऐसा उदास या निराश भाव से नहीं करता बल्कि संयम से करता है। जैसे-जैसे दिन बितते हैं, वो उन्हें गिनता है, वो बहुत सारी आशीषों को गिनता है, बहुत सारे विशेष अधिकारों को गिनता है, बहुत

सारे अवसरों को गिनता है --"कि जिसने हमें अन्धकार में से अपनी अदभुत ज्योति में बुलाया है, उनके गुण प्रगट करो"। दूसरों की मदद करने के लिए जो इस परदेशी यात्रा में हमारे साथी हैं और खुद में उस चरित्र को बढ़ाते हैं जो परमेश्वर की दृष्टि में भावता हुआ है--ताकि परमेश्वर के प्रिय पुत्र की नक़ल ज्यादा से ज्यादा बन सकें। Z.'01-333 R2896:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (7 जनवरी)

तीतुस 3:2 किसी को बदनाम न करें; ...।

यदि एक बार क्रूस के योद्धा में यह उचित सोच आ जाए कि, किसी की बदनामी करना या दूसरों पर दोष लगाना एक दूसरे के चरित्र का घात या हत्या करने के बराबर है और निंदा करना दूसरों के अच्छे नाम को लूट लेने के बराबर है, तो जल्द ही वे इस मामले को सही मायने में भयंकर प्रकाश में देखेंगे, अवश्य वैसा ही देखेंगे जैसा प्रभु के दृष्टिकोण में ये दिखेगा; और एक बार इस मामले को इस सच्चे, दिव्य दृष्टिकोण से देख लेने के बाद इस नई सृष्टि को अवश्य शरीर के ऐसे कार्यों और शैतान के ऐसे कार्यों पर जयवंत होते रहने के सबसे बड़े कार्यों के लिए यथासम्भव जागरूक कर देना चाहिए। और हममें से हर कोई अपने अंदर से ईर्ष्या, बैरभाव, कुटिलता और निंदा करने के खमीर को निकालने की कोशिश करेगा, ताकि वह भी ह्रदय से शुद्ध हो जाये और अपने प्रभु यीशु मसीह के जैसा बन जाये। Z.'03-425 R3275:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (8 जनवरी)

1 थिस्सलुनीकियों 5:15 सावधान! कोई किसी से बुराई के बदले बुराई न करे; पर सदा भलाई करने पर तत्पर रहो आपस में और सब से भी भलाई ही की चेष्टा करो।

परमेश्वर के वचनों के स्तर से, परमेश्वर के चुने हुए जो कि प्रभु यीशु मसीह की कलीसिया होगी वह दुनिया के सभी लोगों की तुलना में सबसे ज्यादा सभ्य होगी, सुशील होगी, भद्र होगी, उदार होगी, अच्छी होगी। प्रभु यीशु मसीह की कलीसिया केवल बाहरी तौर से सभ्य, भद्र, और अच्छी नहीं होगी जैसा कि दुनिया के लोग होते हैं बल्कि ये सम्पूर्ण रूप से ऐसी होगी। ये ह्रदय से सभ्य, भद्र और अच्छे होंगे, और यह सब परमेश्वर की आत्मा, सच्चाई की आत्मा, प्रेम की आत्मा और न्याय की आत्मा के प्रति आभार प्रगट करेंगे। Z.'01-297 R2879:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (9 जनवरी)

1 कुरिन्थियों 4:7 क्योंकि तुझ में और दूसरे में कौन भेद करता है? और तेरे पास क्या है जो तू ने (दूसरे से) नहीं पाया: ...।

परमेश्वर के सभी समर्पित लोगों को ये महसूस करना चाहिए कि उन्हें अभी ये अनुग्रह और सच्चाई जो मिली है, न तो उनके अपने ज्ञान से और न ही दूसरों के ज्ञान के द्वारा, बल्कि केवल परमेश्वर के ज्ञान और अनुग्रह से ये सच्चाई मिली है। जो लोग परमेश्वर की कलीसिया की सेवा करते हैं, अलग-अलग जिम्मेवारियों को

अलग-अलग विभाग में रहकर निभाते हैं, विश्वास के घराने में रहकर जो भी अवसर मिलता है, वो कार्य करते हैं, परमेश्वर के प्रवक्ता (संवाददाता, संदेशा सुनानेवाले) बनकर उनकी बातों को दूसरों से बाँटते हैं, इन सभी लोगों को ये स्वीकार करना चाहिए और ये महसूस करना चाहिए कि वे सभी अवसर और अनुग्रह उन्हें परमेश्वर से मिल रहें हैं और वे जो भी कर रहें हैं अपनी सामर्थ या अपने ज्ञान से नहीं। यदि हम इस बात को स्वीकार करने में असफल हो जाएँ तो इस बात की कदर करने में भी असफल हो जाएंगें। Z.'03-430 R3278:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (10 जनवरी)

याकूब 5:10 हे भाइयो, जिन भविष्यद्वक्ताओं ने प्रभु के नाम से बातें की, उन्हें दुख उठाने और धीरज धरने का एक आदर्श समझो।

जो सकेत मार्ग है वही सही मार्ग है, ये मार्ग स्वंय की इच्छा से इन्कार करने और स्वंय का अपमान सहने का मार्ग है, नम्रता और समर्पण का मार्ग है, धीरज से सहने का मार्ग है। इस मार्ग पर चलने के लिए हमे पिछले साल की तरह ज्यादा प्रयत्न करना होगा और अनुग्रह चाहिएगा। हो सकता है कि, पिछले साल की तुलना में ज्यादा प्रयत्न करना पड़े और ज्यादा अनुग्रह की जरूरत पड़े, क्योंकि जैसे-जैसे हम अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ते जाते हैं, उतनी ही लालसाएँ हमें घमण्डी होने के लिए, फलने के लिए, खुद के लिए ऊँचा सोचने के लिए, उतावला करेंगी। हम विश्वास की सीढ़ी में जैसे-जैसे ऊपर चढेंगें, आशा और प्रेम की सीढ़ी में जैसे-जैसे ऊपर चढेंगें, और परमेश्वर के कार्यों में जैसे-जैसे आगे बढ़ेंगें, उतना ही ज्यादा हमारा विरोधी शैतान हमारी उन्नति का विरोध करेगा, और उसके गुप्तचर हमारी हानि के लिए,

हमें चोट पहुँचाने के लिए झूठी निन्दा करेंगें, चुगली करेंगें और हमें जख्मी करने के लिए पूरा प्रयत्न करेंगें। Z.'95-3 R1751:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (11 जनवरी)

यिर्मयाह 20:9 ...तो मेरे हृदय की ऐसी दशा होगी मानो मेरी हड्डियों में धधकती हुई आग हो, और मैं अपने को रोकते रोकते थक गया पर मुझ से रहा नहीं जाता।

आइये हम सब जिन्हें इस अति कृपालु, आशीषित और ज्ञान की रौशनी से भरे समय में रहने का विशेष अधिकार है, इसकी सारी महिमा केवल प्रभु को ही दें, और यह ध्यान रखें की यूहन्ना का स्नेहमय स्वभाव और उनकी ऊर्जा और उनका उत्साह हमारे अंदर भी प्रगट हो; हालाँकि यूहन्ना को प्यारा चेला बुलाया गया था, लेकिन हमें यह याद रखना चाहिए की ऐसा इसलिए था, क्योंकि उनके अंदर प्रचंड मात्रा में उत्साह था, उनके भाई बोनेरगेस की तरह, और इन दोनों को 'गर्जन के पुत्र' भी कहा जाता था। आइये हम भी प्रेम से तत्पर होकर, ऊर्जा और बलिदान से भरे हों, ताकि हम हमारी देह में और आत्मा में जो की प्रभु की है, प्रभु की महिमा कर सकें।

Z.'01-151 R2808:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (12 जनवरी)

गलातियों 6:1 हे भाइयों, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जाए, तो तुम जो आत्मिक हो, नम्रता के साथ ऐसे को संभालो, और अपनी भी चौकसी रखो, कि तुम भी परीक्षा में न पड़ो।

आइये हम दूसरों की आलोचना बहुत कोमलता से, बहुत ध्यान रखते हुए, बहुत ही विनम्रता से, एक इशारे के द्वारा करने का पाठ अच्छे से सीखें। उनपर सीधा दोष लगाने की जगह, उनके ह्रदय की अवस्था की जाँच करें - उनके ह्रदय की पहले की स्थिति जिसमें हम जानते हैं की उन्होंने गलती की थी, उसकी जाँच करने के बजाये, उनके वर्तमान ह्रदय की स्थिति की जाँच करें। किसी के द्वारा की गयी गलतियों की सजा क्या होगी, इसके प्रति हमें कम सावधान रहना है। बल्कि हमारा पूरा ध्यान इसपर होना चाहिए की उसको उसके गलत मार्ग से सही हालत में वापस कैसे लाया जाये? हमें एक-दूसरे के साथ बुरा व्यवहार करने के लिए उनका न्याय नहीं करना है और न ही उन्हें सजा देने का प्रयास करना है, बल्कि यह याद रखना है कि यह सब प्रभु के हाथों में है; -हमें शब्दों के द्वारा किसी भी मात्रा में उनसे बदला नहीं लेना है, या गलती के लिए उन्हें सजा नहीं देना है और न ही उनकी गलती की भरपाई करनी है। Z.'01-150 R2807:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (13 जनवरी)

1 यूहन्ना 2:1 हे मेरे बालकों, मैं ये बातें तुम्हें इसलिये लिखता हूं, कि तुम पाप न करो; और यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात धार्मिक यीशु मसीह।

यदि हम पाते हैं कि, विश्वास की कमी या शरीर की कमजोरी के माध्यम से एक गलत कदम उठाया गया है, जो परमेश्वर की इच्छा और हमारे सर्वोत्तम आत्मिक हितों के विरुद्ध है, तो हमें अपने कदम पीछे हटाने में और प्रभु को याद करने में कोई भी समय नहीं गंवाना चाहिए। हमारे पास एक वेदी है जो प्रभु यीशु मसीह के

बहुमूल्य लहू के द्वारा पवित्र की गई है, जो हर तरह से श्रेष्ठ है, जो अब्राहम के द्वारा छाया में जानवरों के लहू के द्वारा पवित्र की गई वेदी से हर प्रकार से श्रेष्ठ है, और प्रेरित हमें कहते हैं। "इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर (साहसपूर्वक - पूर्ण विश्वास के साथ) चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे" - इब्रानियों 4:16॥ Z.'01-233 R2848:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (14 जनवरी)

1 कुरिन्थियों 9:26 इसलिये मैं तो इसी रीति से दौड़ता हूं, परन्तु लक्ष्यहीन नहीं; मैं भी इसी रीति से मुक्कों से लड़ता हूं, परन्तु उसके समान नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है।

जब हम समझदारी से अपनी इच्छा का पूरा समर्पण करते हैं, - अपने मन और शरीर की हर शक्ति और हुनर की प्रभु यीशु की सेना में पूरी भर्ती करते हैं तब गिरे हुए स्वभाव की कमजोरियों को एक बड़ी मदद मिलेगी। वह जो प्रभु के प्रति अपने समर्पण और प्रभु की सेना में भर्ती होने के प्रति उचित नजरिया रखता है, यह महसूस करता है कि, उसके पास प्रभु को देने के लिए इससे अधिक कुछ है ही नहीं, और इसलिए, जब वह अंततः यह निर्णय ले लेता है कि - "मैं तो अपने घराने समेत यहोवा की सेवा नित्य करूंगा", उसके पुराने और नए मन के बीच जो भी संघर्ष हो सकता था, वह तब ख़त्म हो जाता है। यह कितना महत्वपूर्ण है, इसलिए, कि सभी योद्धाओं को यह महसूस करना है कि, प्रभु की सेना में उनकी भर्ती मरते दम तक है, और यह कि, इस विश्वास की अच्छी लड़ाई से पीछे हटने के लिए, किसी भी

सुझाव पर विचार करने के लिए उनके पास जगह ही नहीं है, और इस विश्वास की अच्छी लड़ाई को लड़ने के लिए, यहाँ तक कि, हम एक घंटे के लिए भी नहीं रुक सकते हैं। Z.'03-421 R3273:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (15 जनवरी)

मीका 6:8 यहोवा तुझ से इसे छोड़ और क्या चाहता है, कि तू न्याय से काम करे, और कृपा से प्रीति रखे, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले?

ये बहुत ही उचित आवश्यकताएं हैं जिन्हें सभी स्वीकार करेंगे। परमेश्वर को उन लोगों से कम की आवश्यकता नहीं हो सकती है जिन्हें वे आने वाले भविष्य में दुनिया का न्याय करने के लिए अभी शिक्षित कर रहे हैं, यह स्पष्ट है: और फिर भी, भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से इन तीनों गुणों को संक्षेप में एक शब्द -- प्रेम में समझा जा सकता है। प्रेम के लिए आवश्यक है कि हम अपने पड़ोसियों के साथ, सच्चाई के भाईयों के साथ, अपने परिवार के साथ, स्वयं के साथ, न्यायपूर्ण व्यवहार करें; कि हम दूसरों के अधिकारों, उनके शारीरिक अधिकारों, उनके नैतिक और बुद्धि-संबंधी अधिकारों के प्रति सराहना प्रकट करने की आदत को बढ़ाएं, उनकी स्वतंत्रता की सराहना करें; और, इनकी सराहना करते हुए, हम शब्द के द्वारा उन्हें अस्वीकार करने की कोशिश न करें। Z.'02-172 R3020:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (16 जनवरी)

रोमियों 12:12 प्रार्थना मे नित्य लगे रहो।

प्रार्थना में नित्य लगे रहना प्रभु के प्रिय साथी-चेलों के लिए एक धन्य विशेषाधिकार है; हम जो उनके चेले हैं, किसी भी समय और किसी भी स्थान पर परमेश्वर की ओर अपने मन और दिमाग को ले जा सकते हैं, और इस प्रकार से हम प्रतिदिन और प्रति घंटे ये महसूस कर सकते हैं कि, परमपिता और हमारे प्यारे प्रभु यीशु लगातार हमारे साथ वास करते हैं। और फिर, जब दिन के सक्रिय कार्यों को उनकी दृष्टि और देखरेख में किया जाता है, या किसी भी समय जब हमारी आत्मा को उनकी आवश्यकता का एहसास होता है, तो कितना बहुमूल्य है यह विशेषाधिकार हमारे लिए, कि हम परमेश्वर के साथ अकेले में, अपने मन का बोझ उनको कह कर, जी हल्का कर लेते हैं। Z.'95-215 R1866:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (17 जनवरी)

यहूदा 21 अपने आप को परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखो; और अनन्त जीवन के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया की आशा देखते रहो।

हम प्रतिदिन और प्रति घंटे धार्मिकता के सिद्धांतों के प्रति आज्ञाकारी रहकर और इन सिद्धांतों के प्रति अपने प्रेम को बढ़ाने के द्वारा अपने आप को परमेश्वर के प्रेम में बनाये रख सकते हैं। और जितना आनंदित हम जीवन के सुःखों में रहते हैं, कम से कम उतना ही आनंदित हमें जीवन के हर एक अनुभव में रहना है, -- जीवन की परीक्षाओं, परेशानियों, दुःखों, निराशाओं आदि में, विशेषकर यदि इनमें से किसी एक या इन सभी साधनों के द्वारा प्रभु हमें सिखाएंगे और हमें अपनी कमियों के

बारे में स्पष्ट जानकारी देंगें, और जिस स्वत्रंता और प्रेम की व्यवस्था को उन्होंने स्थापित किया है, उसके बारे में और ज्यादा स्पष्ट जानकारी देंगें, क्योंकि इन सब के प्रति प्रभु हमारा सम्पूर्ण और वफ़ादारी से भरे ह्रदय का समर्पण चाहते हैं।

Z.'02-173 R3021:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (18 जनवरी)

रोमियों 12:11 प्रयत्न करने में आलसी न हो; आत्मिक उन्माद में भरो रहो; प्रभु की सेवा करते रहो।

आइये वे सभी जो इस स्वर्गीय बुलावे की दौड़ को सफलतापूर्वक दौड़ेंगे, प्रभु के कार्य में अपने उत्साह और क्रियाओं की निगरानी अच्छी तरह से कर लें। यदि हम सांसारिक चिंताओं और बोझ के भार से, जिन्हें टाला जा सकता है या अलग रखा जा सकता है, अपनी एक या बहुत सारी प्रतिभाओं को गाढ़ देते हैं; यदि हम उन्हें स्वयं या परिवार के लिए सांसारिक महत्वाकांक्षाओं के तहत गाढ़ देते हैं - चाहे फिर, यह हम अपने समर्पित समय को नीचे की रुचियों में बर्बाद करने के द्वारा करें-चाहे वह विज्ञान, ज्ञान सम्बन्धी पढ़ाई, संगीत या कला, या व्यवसाय, राजनीति या सुख विलास पर हो, या घमण्ड और खाने के प्रति लाड़-प्यार से सम्बन्धित हो, -- तो हम उन विश्वासघाती सेवकों की तरह आज नहीं तो कल बाहरी अन्धकार में चले जाएंगे।

Z.'91-9 R1282:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (19 जनवरी)

भजन संहिता 119:97 अहा! मैं तेरी व्यवस्था से कैसी प्रीति रखता हूं! दिन भर मेरा ध्यान उसी पर लगा रहता है।

प्रभु के वचन की पढ़ाई करना मसीहियों के लिए एक बहुत बड़ा विशेषाधिकार है फिर भी ये पढ़ाई का बहुत सारा हिस्सा बिना किसी उद्देश्य के किया जाता है। जो वचनों की पढाई को अभ्यास में नहीं लाता है वह समय को नष्ट करता है ... परमेश्वर के लोगों को दिव्य योजना का ज्ञान प्राप्त करने के लिए हर उचित अवसर को उपयोग में लाना चाहिए - यहां तक कि, किस हद तक हमें बलिदान करना है; लेकिन परमेश्वर के बच्चे को ख़ास रूप से यह देखना चाहिए कि यह उसका अपना उचित समय और चैन है, जिसका वह बलिदान कर रहा है, और मुख्य रूप से दूसरों का उचित समय और चैन नहीं, जिसको वह बलिदान कर रहा है। बाईबल की पढ़ाई जो केवल दूसरों के समय के मूल्य पर की जाती है, वह परमेश्वर के प्रति प्रेम की भावना के रहने के एक संकेत के बजाय स्वार्थ का संकेत है।

Z.'99-156 R2488:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (20 जनवरी)

इब्रानियों 12:7 तुम दुख को ताड़ना समझकर सह लो: परमेश्वर तुम्हें पुत्र जान कर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है; वह कौन सा पुत्र है, जिस की ताड़ना पिता नहीं करता?

परीक्षा के बिना चरित्र का विकास पूरी तरह से नहीं किया जा सकता है। चरित्र एक पौधे की तरह है: पहले यह बहुत नाजुक होता है; इसे परमेश्वर के प्रेम के धुप की प्रचुरता में आवश्यकता होती है; उनके अनुग्रह की बौछारों के साथ लगातार पानी चाहिए होता है; परमेश्वर के चरित्र के ज्ञान को, विश्वास के लिए अच्छे आधार के रूप में और आज्ञापालन के लिए प्रेरणा के रूप में लागू करने के माध्यम से इस चरित्र रूपी पौधे का अधिक विकास होता है; और इस प्रकार से यह पौधा जब अनुकूल परिस्थितियों में बढ़ता है, तब यह अनुशासन की छँटाई के हाथ के लिये तैयार हो जाता है, और फिर कुछ कठोरता को सहने में सक्षम होता है। और, थोड़ा-थोड़ा करके, जैसे चरित्र की मजबूती बढ़ती है, इस पर पड़ी परीक्षाएं चरित्र को और अधिक मजबूती, सुंदरता और अनुग्रह में बढ़ाती जाती है, जब तक की यह चरित्र अंत में पीड़ाओं के माध्यम से पक्का, विकसित, स्थापित और सिद्ध नहीं हो जाता है। `Z.'95-107 R1807:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (21 जनवरी)

मत्ती 16:24 यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले।

क्रूस उठाना स्वंय से इनकार करने से बहुत नजदिक से जुड़ा हुआ है, और फिर भी उनके बीच एक अंतर है जिसको ध्यान में रखा जा सकता है। प्रभु के लिए स्वंय से इनकार करना ज्यादातर खासकर चुपचाप रहकर

आज्ञापालन करना और धीरज से सहने के रूप से संबंधित है; क्रूस उठाना विशेष रूप से प्रभु की सेवा के कार्यों से ज्यादा जुड़ा है, जो हमें हमारे प्राकृतिक झुकाव के विपरीत लगता है। स्वंय से इनकार करने के प्रति विश्वसनीयता रखने का मतलब है साहस और उत्साह; क्रूस उठाने का मतलब है विजय, जयवन्त होना। हमारा स्वंय से इनकार करना हमारे खुद के हृदयों में जीत हो सकती है, जिसके बारे में दूसरों को कुछ भी नहीं पता हो सकता है, और जिसके बारे में उन्हें कुछ भी पता नहीं होना चाहिए, अगर हम परमेश्वर के आशीष की पूर्णता चाहते हैं। हमारा क्रूस उठाना, हालांकि, कुछ हद तक कम से कम उन लोगों द्वारा देखा जा सकता है, जो हमारे साथ नजदीक संपर्क में हैं, और खासकर उन लोगों के द्वारा जो इसी "सकेत रास्ते" में चल रहे हैं। Z.'00-118 R2616:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (22 जनवरी)

भजन संहिता 31:24 हे यहोवा पर आशा रखने वालों हियाव बान्धो और तुम्हारे हृदय दृढ़ रहें!

ऐसा लगता है कि कई बार शैतान हमें निराश करने के लिए, यह सोचने पर मजबूर करता है कि, बलिदान के इस "सकेत रास्ते" की परिक्षाएं और

कठिनाइयाँ किसी भी तरह से बेकार हो जाएंगी, ताकि हम हार मानकर इस "सकेत मार्ग" को छोड़ दें...और ऐसे समय में हमें कौन सा मार्ग लेना चाहिए? हमें अपने प्रभु यीशु के उदाहरण का अनुकरण करना चाहिए, और परमपिता के चेहरे की तलाश करनी चाहिए, और यह जानने के लिए उत्सुक होना चाहिए कि हमारे हित उनके साथ तालमेल में हैं या नहीं; जब दुनिया हमसे नफरत करें, और हमारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें, फिर भी हमें परमपिता की स्वीकृति है, इस आश्वासन के लिए उत्सुक होना चाहिए; कुछ नए आश्वासन के लिए हमें उत्सुक रहना चाहिए, कि हमारे साथ सब अच्छा ही होगा, कि परमेश्वर हमें अनन्त जीवन के लिए उत्तम पुनरुत्थान में एक हिस्सा देंगे। Z.'01-79 R2774:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (23 जनवरी)

1 कुरिन्थियों 7:24 हे भाइयो, जो कोई जिस दशा में बुलाया गया हो, वह उसी में परमेश्वर के साथ रहे॥

कर्तव्यों में कई बार मेल न खाना प्रतीत होता है, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। एक मसीही का पहला कर्तव्य अपने सृष्टिकर्ता और परमेश्वर के प्रति ह्रदय से स्वीकृति होती है, उनके सभी तरीकों में। उसका दूसरा कर्तव्य, यदि वह एक पति और पिता है, तो अपनी पत्नी और बच्चों की ओर है; या अगर वह एक पत्नी और माँ है, तो उसका कर्तव्य उसके पति

और बच्चों के प्रति है ...दिव्य व्यवस्था के द्वारा, शादी का तय होना, हर पति के समय पर और प्रत्येक पत्नी के समय पर पहली बंधक के रूप में आता है - इस बंधक की मांग को पहले उचित रूप से पूरा करना होगा, दूसरों के प्रति कुछ भी अच्छी तरह से करने से पहले।

Z.'99-155 R2488:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (24 जनवरी)

नीतिवचन 3:3 कृपा और सच्चाई तुझ से अलग न होने पाएं; वरन उन को अपने गले का हार बनाना, और अपनी हृदय रूपी पटिया पर लिखना।

हालाँकि न्याय प्रेम की आज्ञा की पहली विशेषता है, पर यह इसकी आवश्यकताओं का अंत नहीं है: इसके लिए यह आवश्यक है कि, कठोर न्याय से परे जाकर, हमारा प्रेम हमें दया और क्षमा के अभ्यास के लिए प्रेरित करे। और इस प्रकार से दया का अभ्यास करके हम फिर से दिव्य प्रेम का अनुकरण करते हैं...इसलिए, दूसरों के साथ हमारे व्यवहार में, जो हमारी ही तरह, गिरे हुए और अपरिपूर्ण हैं, हमें दया के इस दिव्य गुण को याद रखना है, और न केवल उनके प्रति, बल्कि इसके अलावा जो कृतघ्न हैं, उनके प्रति भी करुणामय, उदार और दयालु होना है - ताकि इस प्रकार से हम स्वर्ग में अपने पिता की संतान हो सकें। Z.'02-171 R3020:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (25 जनवरी)

मत्ती 6:34 अतः कल के लिये चिन्ता न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा; आज के लिये आज ही का दुख बहुत है॥

हमारे प्रभु हमें आश्वासन देते हैं कि, यदि हमारे हृदयों का मुख्य विचार परमेश्वर की सेवा और धार्मिकता की उन्नत्ति होना है और परमेश्वर के राज्य की प्राप्ति होना है, जिसका परमेश्वर ने उनसे वादा किया है, जो उनसे प्रेम करते हैं, तो हममें भविष्य से सम्बन्धित कोई व्याकुलता नहीं होना चाहिए। हमारे पास प्रभु के चेलों के रूप में, दिन-प्रतिदिन, पर्याप्त रूप से परीक्षाएँ और क्लेश होंगे, और जैसे-जैसे हम प्रतिदिन इस सकेत मार्ग में चलने की कोशिश कर रहे हैं, हमें हर चीज़ के लिए अपने दूल्हे (प्रभु यीशु) पर निर्भर करना है। उसी तरह, हर दिन के लिए बुराई भी पर्याप्त होगी: और परमेश्वर का धन्यवाद हो, की, हमारे पास परमेश्वर का वादा है कि “मेरा अनुग्रह ही तुम्हारे लिए बहुत है”। Z.'98-44 R2260:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (26 जनवरी)

मत्ती 6:16 जब तुम उपवास करो, तो कपटियों के समान तुम्हारे मुंह पर उदासी न छाई रहे।

परमेश्वर के लोगों के लिए उपवास रखना विशेष रूप से सराहनीय है, जब वे खुद को आत्मिक रूप से कमजोर पाते हैं, और दुनिया, शरीर और शैतान के द्वारा गंभीर लालसाओं के संपर्क में आते हैं; क्योंकि ऐसा करके वे अपने शारीरिक बल और जीवन शक्ति को शक्तिहीन करते हैं, जो कि उनके आवेश से भरे स्वभाव पर आत्म - नियंत्रण करने में उनकी सहायता करता है। हमारा मानना है कि ज्यादातर मसीहियों को कभी कभी उपवास रखने के द्वारा सहायता मिलेगी - पूरा भोजन छोड़ने की जगह , एक मौसम के लिए बहुत सादा भोजन खाना। उपवास करना खुद की शारीरिक लालसाओं पर नियंत्रण करने और आत्म -संयम की बढ़ोतरी के लिये लाभदायक होना चाहिए, लेकिन साधारणतया, जब उपवास रखने को लोगों के द्वारा या हमारे अपने मन में, हमारी ओर से परमेश्वर के प्रति भक्ति के चिन्ह के रूप में देखा जाये, तो वास्तव में यह हमारे लाभ से कहीं अधिक हानिकारक होगा, और यह हमें आत्मिक रूप से घमण्ड और कपट की और ले जायेगा। Z.'98-45 R2260:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (27 जनवरी)

नीतिवचन 4:23 सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।

यह काफी नहीं है कि हम मानें की पाप के विभिन्न रूप बुराई को दर्शाते हैं, और यह की हम बुराई के विरुद्ध संघर्ष करने का संकल्प केवल इसलिए करें क्योंकि यह प्रभु के द्वारा मना किया हुआ है। इसके अलावा, हमें अपने हृदय की हर लालसा को, हर वस्तु और हर वो इच्छा को, जिसकी स्वीकृति प्रभु के द्वारा हमें नहीं मिली है, जड़ से खत्म कर देना है, पूरी तरह से निकाल देना है। ओह, इसका मतलब उनमें से बहुतों के हृदयों और जीवन में क्या सफाई होगी, और खासतौर पर विचारों की, जिन्होंने मसीह के नाम को अपना लिया है! जो लोग इस बात पर ध्यान देने में विफल हो जाते हैं, वे खुद को लगातार लालसाओं से घिरे पाते हैं, क्योंकि हालाँकि वे बाहरी रूप से इन बड़ी दिखनेवाली अनैतिकताओं से बचने की कोशिश करते हैं, पर गुप्त रूप से, वे निंदा की गई चीजों के प्रति सहानुभूति रखते हैं - यह चाहते हुए कि अगर प्रभु ने इन बुरी वस्तुओं के लिये मना न किया होता तो वे उनका सुख उठा सकते थे। Z.'99-140 R2480:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (28 जनवरी)

प्रकाशितवाक्य 3:5 जो जय पाए, उसे इसी प्रकार श्वेत वस्त्र पहिनाया जाएगा, और मैं उसका नाम जीवन की पुस्तक में से किसी रीति से न काटूंगा, पर उसका नाम अपने पिता और उसके स्वर्गदूतों के सामने मान लूंगा।

विश्वासी जयवंत लोग जागते रहते हैं और अपने वस्त्रों को संसार से निष्कलंक रखते हैं... "जिन्होंने अपने अपने वस्त्र अशुद्ध नहीं किए", वे अपने आप को "संसार से निष्कलंक रखते हैं"। वे पाप को उन्हें दूषित करके प्रभु से अलग करने की अनुमति देने के इच्छुक नहीं होते हैं, बल्कि हर एक दाग को हटाने के लिये, वे जल्दी से आवेदन करके बहुमूल्य लहू को प्राप्त करते हैं। वे इतने दिल से पाप का विरोध करते हैं और इस वस्त्र को निष्कलंक रखने के बारे में इतने गंभीर हैं, ताकि विरोधी शैतान उनको पकड़ न पाये - "वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता।" यह सब मसीह की इच्छा के प्रति उनकी इच्छा के पुरे समर्पण को दर्शाता है - वे "उनके साथ मर चुके" हैं, और इसलिए स्वेच्छा से कोई पाप नहीं कर सकते हैं। Z.'97-161 R2161:1आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (29 जनवरी)

भजन संहिता 111:10 बुद्धि का मूल यहोवा का भय है...॥

अपने सृष्टिकर्ता के प्रति केवल श्रद्धामय भय का नजरिया ही सही है, जो हमारे जीवन के लेखक हैं, पूरे ब्रह्मांड के रचयिता हैं, हमको पालने वाले और परमेश्वर हैं। इसलिए, जब परमेश्वर बोलते हैं तो हमारे कानों

को उनकी आवाज के प्रति आदर का भय रखना चाहिए, और हमारी हर शक्ति को उनके आवाज़ के प्रति आज्ञा पालन रखने के लिए सतर्क होना चाहिए। हमारी सुरक्षा, खुशी, और चरित्र की श्रेष्ठता, जो प्रेम और परमेश्वर के प्रति प्रभु यीशु के द्वारा धन्यवाद करने को प्रेरित करती है, और जो बुद्धिमानी से ध्यानपूर्वक आदेशों को ग्रहण करके ज्ञान और बुद्धि में उन्नति करता है, यह सब मुख्य रूप से प्रभु के प्रति हमारी सर्वोच्च पवित्र डर पर निर्भर करता है। और इसलिए प्रभु अपने नाम के कारण, हममें उनके प्रति आदर के साथ भय रखने के लिये प्रोत्साहित करेंगे और इसे बढ़ाने में हमारी सहायता करेंगे।Z.'96-155 R2002:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (30 जनवरी)

लूका 18:1 फिर उसने इस के विषय में कि नित्य प्रार्थना करना और हियाव न छोड़ना चाहिए उन से यह दृष्टान्त कहा।

परमेश्वर के पास आने में हमें कोई भी डर नहीं होना चाहिए, कि वे ज्यादा महत्वपूर्ण अन्य मामलों में बहुत व्यस्त हैं, या यह कि वह हमारे बार-बार कम महत्वपूर्ण मामलों के साथ उनके पास आने से वे ऊब जायेंगे। इसी बात के प्रति आश्वासन देने के लिए प्रभु ने एक दृढ़ता से लगातार विनती करने वाली विधवा का दृष्टांत सुनाया था , जिसकी विनती, उसके लगातार दृढ़ता से बार - बार करते रहने के कारण सुनी गई थी। ऐसा करके हम अपने मन की इच्छा की गंभीरता और जब हमारी प्रार्थनाओं

का उत्तर आने में देरी हो जाये, तो हम विश्वास या उत्साह की कमी के कारण हियाव छोड़े बिना, हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर मिलेगा यह विश्वास दिखाते हैं, और यह हमारी गंभीरता और विश्वास दोनों का प्रमाण दिखाता है। Z.'95-214R1865:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (31 जनवरी)

भजन संहिता 25:9 वह नम्र लोगों को न्याय की शिक्षा देगा, हां वह नम्र लोगों को अपना मार्ग दिखलाएगा।

नम्रता का स्वभाव उन लोगों के लिए आवश्यक है, जो परमेश्वर से ऊपरी ज्ञान को प्राप्त करेंगे। इनको अपनी कमियों और बुद्धि की घटी को नम्रतापूर्वक आँकना आवश्यक है, अन्यथा, वे उस ज्ञान को नहीं पा सकते हैं, जिसे अभी के समय में परमेश्वर केवल उनको देकर प्रसन्न होते हैं, जिनका हृदय इस ज्ञान को पाने के लिये सही दृष्टिकोण रखता है। और यह भी देखा जाएगा कि मन की विनम्रता, संयम बुद्धि की आत्मा पाने के लिए एक आवश्यक आधार है - क्योंकि ऐसा कौन होगा, जो उचित, यथोचित, निष्पक्ष रूप से सोचने की उचित स्थिति में हो, सिवाय इसके कि उसके पास एक विनम्र स्वभाव है? इसलिए हमें सहमत होना चाहिए कि मसीह का मन या स्वभाव होने के लिए हममें विनम्रता होना जरुरी है, जो की एक प्राथमिक तत्व है। Z.'00-68 R2585:5 आमीन